अनन्त चतुर्दशी - 25 सितम्बर 2026

सृष्टि विष्णु की ही माया, लीला का स्वरूप है।
भगवान श्री विष्णु का सगुण स्वरूप भी है और निर्गुण स्वरूप भी।
माया रूपी स्वरूप में वे लक्ष्मी के साथ अपने भक्तों को अभीष्ट फल प्रदान करते हैं...

अनन्त विष्णु साधना

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलम् स्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्।।

यह चंचल और अस्थिर मन जहां-जहां भटक जाए, वहां-वहां से उसे संयमपूर्वक हटाकर पुनः आत्मा में, परम सत्य में स्थिर करना चाहिए।

विष्णु-तत्व मन को केवल शान्त ही नहीं करता, बल्कि उसे धर्म, कर्तव्य और करुणा की दिशा में प्रेरित करता है।

विष्णु उपासना को अन्तःकरण की निर्मलता और जीवन की स्थिरता का आधार माना गया है।



विष्णु साधना अनन्त साधना है, जो साधक के शरीर ही नहीं, मन के ऊपर आए दोषों का भी निराकरण कर उसमें तेज, कर्मशीलता का उद्भव कर उसकी शक्ति को जाग्रत कर, शक्ति का विकास कर, साधक को अनन्त की ओर अर्थात् विशालता की ओर ले जाती है, सूक्ष्म से विराट की ओर, धरती से आकाश की ओर उठने की साधना ही तो अनन्त विष्णु साधना है। भगवान विष्णु के अनन्त स्वरूप की साधना करने से अनन्त साधनाओं का, अनन्त देवों के प्रभाव का फल मिलता है। अनन्त चतुर्दशी भगवान विष्णु की साधना का श्रेष्ठ दिवस है।

अनन्त चतुर्दशी का शास्त्रों में विशेष महत्व है और बताया गया है कि जीवन में हमें बाधाएं या अड़चनें इसीलिए आती रहती हैं कि हम पूर्ण रूप से शुद्ध और पवित्र नहीं हैं अर्थात् हमारे जीवन में पाप-दोष अधिक हैं।

...और जब दोष समाप्त हो जाते हैं, तो मन शुद्ध और चैतन्य हो जाता है, फलस्वरूप चेहरे पर तेजस्विता आ जाती है, उसकी वाणी में दृढ़ता एवं स्पष्टता आ जाती है और वह जीवन में सफलता की ओर अग्रसर होने लगता है।

जीवन से पाप दोष समाप्त कर, मन को सुदृढ़ करने वाले विष्णु तत्व से समाहित होने की क्रिया का नाम ही अनन्त साधना है। भगवान विष्णु की अनन्त साधना से मनुष्य के मन की अनन्त शक्तियां जाग्रत होती है तथा साधक पुरुष से पुरुषोत्तम बनने की क्रिया प्रारम्भ कर देता है। इस साधना को सम्पन्न करने पर तत्क्षण साधक के चेहरे पर ओज और तेजस्विता में वृद्धि होती है और अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण करने में सक्षम होता है। कई बार तो साधना समाप्त होते-होते उसके कार्य की पूर्ति के समाचार प्राप्त हो जाते हैं।

ऐसे कई साधक हैं जिन्होंने संकल्प पूर्वक अनन्त साधना को अपने जीवन का एक अंग बना लिया है। प्रत्येक वर्ष साधक गुरु द्वारा प्राप्त अनन्त चतुर्दशी साधना सम्पन्न करते हैं। जो पुरुष हैं और पुरुषोत्तम बनने की इच्छा रखते हैं उन्हें तो निश्चय ही अनन्त चतुर्दशी को साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना-विधान

भगवान **अनन्त (विष्णु)** से सम्बन्धित यह महत्वपूर्ण पर्व इस वर्ष दिनांक **25 सितम्बर 2026** को आ रहा है।

साधक को चाहिए कि **अनन्त चतुर्दशी** के दिन ही (यह साधना पूरे दिन में कभी भी सम्पन्न की जा सकती है) साधक स्नान कर पीला या सफेद आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाए और अपने सामने एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा दें।

किसी भी साधना-पूजन की पूर्णता गुरुदेव निखिल के आशीर्वाद के बिना संभव ही नहीं है। अतः सर्वप्रथम गुरुदेव का विधिवत् पूजन अवश्य ही सम्पन्न कर लेना चाहिए। आप अपने दैनिक पूजन में गुरुदेव के जिस चित्र, पादुका, यंत्र अथवा विग्रह का पूजन करते हैं उसे स्वच्छ कर अपने सामने स्थापित कर लें। दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव निखिल का ध्यान करें -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

निखिल ध्यान के पश्चात् गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका को जल से स्नान करावें -

ॐ निखिलम् स्नानम् समर्पयामि॥

इसके पश्चात् स्वच्छ वस्त्र से पौंछ लें निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए कुंकुम, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप-दीप से पंचोपचार पूजन करें -

ॐ निखिलम् कुंकुम समर्पयामि।
ॐ निखिलम् अक्षतान समर्पयामि।
ॐ निखिलम् पुष्पम् समर्पयामि।
ॐ निखिलम् नैवेद्यम् निवेदयामि।
ॐ निखिलम् धूपम् आघ्रापयामि, दीपम् दर्शयामि।
(धूप, दीप दिखायें)

अब तीन आचमनी जल गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका पर घुमाकर छोड़ दें।

इसके पश्चात् गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

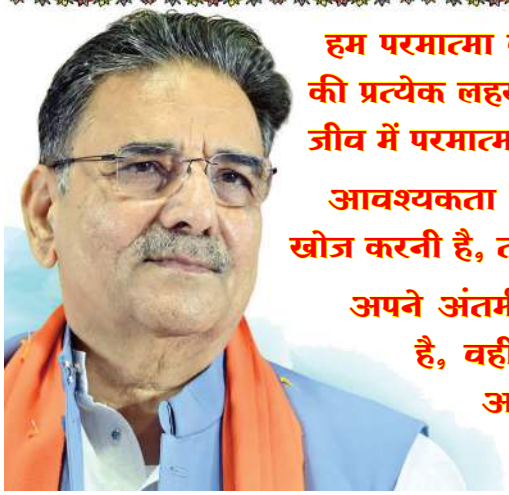
ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

गुरु पूजन के पश्चात् मूल साधना-पूजन निम्न प्रकार सम्पन्न करें -

गुरु चित्र के समक्ष किसी ताम्र पात्र में **'सर्वकामना सिद्धि अनन्त यंत्र'** को स्थापित कर दें। यह यंत्र एक बार घर में स्थापित होने पर भविष्य में प्रति वर्ष यही यंत्र प्रयोग में आता रहता है।

सर्वप्रथम यंत्र को पंचामृत से स्नान करायें, फिर उसे पुनः शुद्ध जल से स्नान कराकर किसी अन्य ताम्र पात्र में *'ऐं ह्रीं श्रीं'* केसर से लिख कर उसमें यंत्र स्थापित करें।

इसके पश्चात् यंत्र का पूजन *'अनन्ताय नमः'* का उच्चारण करते हुए कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प आदि से करें और शुद्ध घृत का दीपक व अगरबत्ती जलाएं।



हम परमात्मा की सर्वोत्तम और दिव्यतम कृति हैं। जिस प्रकार समुद्र की प्रत्येक लहर में समुद्र का ही अस्तित्व होता है, उसी प्रकार प्रत्येक जीव में परमात्मा की चेतना स्पंदित होती है।

आवश्यकता केवल उस चेतना को पहचानने की है। इसलिए यदि खोज करनी है, तो बाहर नहीं, अपने भीतर कीजिए।

अपने अंतर्मन के मौन में उतरिए, क्योंकि वहीं गुरु का मार्गदर्शन है, वहीं इष्ट का सान्निध्य है और वहीं परमात्मा का असीम आनन्द-साम्राज्य है।

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

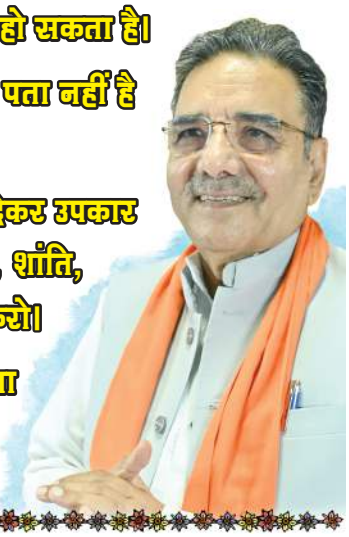
मन से ही ईश्वर जाग्रत हो सकता है और मन से ही घृणा का दानव जाग्रत हो सकता है।

यदि तुम अपनी स्वयं की पहचान जानना चाहते हो, जो पहचान किसी को पता नहीं है वह पहचान तुम्हारा मन है।

इस मन की धारा को देवत्व की ओर जोड़ो, जिससे ईश्वर ने जो यह जन्म देकर उपकार किया है, उस उपकार को घर-परिवार समाज में प्रेम, दया, सद्भावना, आशा, शांति, सहानुभूति, कृतज्ञता, उदारता, सत्य, करुणा और विश्वास के रूप में वितरित करो।

मन से ही इस मनुष्य जीवन को सार्थक करना है, जीवन है तो सार्थक होना ही चाहिये।

– सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली



इस पश्चात् यज्ञोपवीत को यंत्र पर स्थापित कर दें और यज्ञोपवीत में आह्वान करें कि यज्ञोपवीत के प्रत्येक धागे में भगवान अनन्त आकर स्थापित हों।

इसके बाद यज्ञोपवीत के सिर पर जो तीन गांठें होती हैं, उन तीन गांठों के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु, ऊपरी गांठ पर भगवान शिव का निवास है। तीनों गांठों पर केसर लगावें तथा संक्षिप्त पूजन करें।

इसके बाद यज्ञोपवीत को खोल कर दोनों हाथों में लेकर उसे आकाश की ओर ऊपर उठाएं और *'ॐ सूर्याय नमः'* मंत्र द्वारा उस यज्ञोपवीत में सूर्य की तेजस्विता का आह्वान करें, और मन में यह चिन्तन करें कि इस यज्ञोपवीत के प्रत्येक धागे में सूर्य स्थापित हो रहे हैं जो कि मुझे पूर्ण तेजस्विता प्रदान करने में समर्थ हैं, साथ ही साथ भगवान सूर्य मेरे पूर्व जीवन के और इस जन्म के सभी पापों को समाप्त कर रहे हैं और साथ ही साथ जो तीन प्रकार के दोष व्याप्त होते हैं, उन तीनों प्रकार के दोषों को भी भगवान सूर्य समाप्त कर मुझे पूर्ण चैतन्य और शुद्ध बना रहे हैं।

ऐसी भावना मन में रखते हुए यज्ञोपवीत को नीचे उतार लें और फिर उसे समेट कर अनन्त यंत्र के सामने स्थापित कर दें और उस यज्ञोपवीत को भगवान अनन्त का स्वरूप मान कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, उन्हें नैवेद्य समर्पित करें और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि भगवान अनन्त मेरे जीवन की समस्त कामनाओं को पूर्ण करें और अमुक इच्छा को तो तुरन्त ही पूर्ण करें।

इसके उपरान्त भगवान अनन्त का ध्यान करें –

यस्तं विश्वमनाद्यन्तमाद्यं स्वात्मनि संस्थितम्।
सर्वज्ञममलं विष्णुं सदा ध्यायन् विमुच्यते।।

भगवान विष्णु शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी तथा किरीट और कुण्डलों से विभूषित हैं, पीताम्बर से सुशोभित, सुन्दर कमलों के समान नेत्रों वाले, वनमाला तथा कौस्तुभमणि को धारण करने वाले, जो सदा उन विश्व रूप, आदि-अन्त से रहित, सबके आदि कारण, स्वरूपनिष्ठ, अमल एवं सर्वज्ञ भगवान विष्णु का ध्यान करता हूं।

इसके बाद साधक **विद्युत स्फटिक माला** से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप करें –

अनन्त मंत्र

।। ॐ ऐं अनन्ताय ऐं नमः ।।

जब एक माला मंत्र-जप पूरी हो जाए, तब भगवान नारायण की जगदीश आरती और गुरु आरती सम्पन्न करें।

उसके बाद यज्ञोपवीत को धारण कर लें और पुराना यज्ञोपवीत उतार दें। कुछ साधक पुराना यज्ञोपवीत गले में ही रहने देते हैं और उस यज्ञोपवीत को 24 घंटों के लिए दाहिनी भुजा पर बांध लेते हैं। इन दोनों में से किसी भी प्रकार का विधान साधक कर सकते हैं।

इस प्रकार का प्रयोग करने के बाद ही साधक अपने परिवार के साथ भोजन करें और यथोचित दान आदि दें।

अनन्त व्रत करने वाले साधक प्रति वर्ष अनन्त चतुर्दशी के दिन अवश्य ही यह साधना सम्पन्न कर वर्ष भर के लिये भगवान विष्णु की अनन्त कृपा प्राप्त करते है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. – 600/-